Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor : 2.0778, Volume 07, No. 01, January, 2017, pp. 288-292

माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के समायोजन सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन

डॉ. सुलेखा पारीक*
ममता शर्मा **

परिचय

विद्यालय दूसरों तक सूचना पहुंचाने का सबसे अच्छा उपकरण है। यह समाज के रचनात्मक सदस्य बनने और बदलाव के लिए अभिकर्त्ता बनने के लिए व्यक्तिगत रूप से सीखाने (पढ़ाने) का सबसे अच्छा प्रशिक्षण मैदान है। अगर समाज में परिवर्तन लाना है तो यह परिवर्तन शिक्षकों के बिना संभव नहीं है। शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक का महत्त्व निर्विवाद है। शिक्षकों के माध्य से शिक्षा की प्रक्रिया आगे बढ़ रही है। विद्यालय बिना शिक्षकों के शिक्षा की प्रक्रिया को आगे नहीं बढ़ा सकता है। विद्यालयों में रहते हुए शिक्षकों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समय और परिस्थिति के दौरान अपने आप को प्रस्तुत करना पड़ता है। अपने आप को समय के अनुसार जैसे–जैसे परिवर्तन हो रहा है वैसे–वैसे शिक्षकों को अपनी समस्याओं को परिभाषित करने और अपनी समस्याओं में समाधान ढूंढ़ने के लिए अद्वितीय स्थान है कक्षा में क्या चलता है इस बारे में शिक्षकों की अभिव्यक्ति अक्सर लोगों की अभिव्यक्ति से भिन्न होती है। शिक्षक अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक सोच रखता है। आज शिक्षकों की कक्षा–कक्ष में भूमिका बदल चुकी है इसलिए उन्हें विद्यालय समय के दौरान अनेक प्रकार की भूमिकाएं निभानी होती है। आज शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में नयी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शिक्षक एक समूह के रूप में अन्य पेशा के सदस्यों की तुलना में अधिक समायोजित नहीं है। समायोजन की समस्याएं सभी समूहों के लिए आम है, पर अन्य व्यवसायों के सदस्यों से भी अधिक समस्याओं और चुनौतियों का सामना शिक्षकों को करना पड़ता है।

समस्या का औचित्य

कोई भी समस्या साधारण या असाधरण नहीं होती है। कोई भी समस्या केवल तब तक ही समस्या है जब तक कि उस पर ध्यान नहीं दिया जाता है, समस्या यदि महत्वूपर्ण है तो इसका अध्यापन एक विशेष महत्त्व रखता है। प्रस्तुत शोधकार्य हेतु ली ई समस्या भी अपने में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है क्योंकि एक शिक्षक विद्यालय का प्रमुख आधार होता है, विद्यालय की सारी गतिविधियां उसके इर्द–गिर्द ही घूमती रहती है। कभी–कभी ऐसा होता है कि व्यक्ति अध्यापन–व्यवसाय को विवशता में भी अपनाते हैं और इसलिए अध्यापन के प्रति उनके मन में कोई रूचि नहीं होती है।

---

* शोध निर्देशिका, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोधकर्त्री, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

विवशता का कारण यह भी हो सकता है कि वर्तमान में बेरोजगारी अत्यधिक बढ़ गई है, जिसके कारण जो भी सरकारी या निजी नौकरी मिलती है उसे अपना लेते हैं या और कोई रोजगार नहीं मिलता है, तब वह शिक्षण व्यवसाय में आ जाते है। कोई व्यक्ति अपने माँ–बाप की इच्छा से भी अध्यापन व्यवसाय को चुन लेते हैं क्योंकि लड़कियों को उनके माँ–बाप कहते हैं कि अध्यापन व्यवसाय इज्जत की नौकरी होती है अन्य नौकरी में उसे रात–दिन की नौकरी करनी पड़ती है और छुट्टी नहीं मिलती है। चाहे लड़की की इस नौकरी में रूचि हो या नहीं, फिर भी मजबूरीवश इसे यह व्यवसाय को नहीं कर पाते है, इन सब कारणों के कारण शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय के साथ समायोजन नहीं बैठा पाते हैं, जिसके कारण उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसके अलावा वेतन को लेकर भी असंतोष में रहते हैं, क्योंकि अन्य व्यवसायों के बजाय कम वेतन मिलता है। निजी शिक्षण विद्यालयों के शिक्षकों की यह समस्या रहती है कि उसे काम सरकारी शिक्षक जितना ही करना पड़ता है फिर भी उसे वेतन सरकारी शिक्षक जितना नहीं मिलता है, इसे लेकर भी वह तनाव में रहता है। जिसके कारण वह अपने विद्यालयी वातावरण के साथ उचित समायोजन नहीं बैठा पाता है उन घटकों, कारकों एवं क्षेत्रों का अध्ययन करना, जो शिक्षकों में समायोजन से सम्बन्धित समस्याओं को पैदा करते हैं।

यह एक अध्ययन का विषय बन जाता है। साथ ही यह पता लगाना है कि वर्तमान में शिक्षकों पर अन्य कार्य कौन–कौन से है जिसे लेकर वह समायोजन से संबंधित समस्याओं से घिरा रहता है। स्पष्टतः इस अध्ययन में शिक्षकों की समायोजन से संबंधित विभिन्न समस्याओं को बताने का प्रयास किया है विद्यालय में शिक्षकों की महत्वता को दृष्टिगत रखते हुए एंव उसकी समस्याओं को देखते हुए शोधार्थी ने शोध अध्ययन के लिए ''माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के समायोजन संबंधि समस्याओं का अध्ययन'' विषय चुना है। शोधार्थी ने शोध कार्यों में उक्त विषय का अभाव परिलक्षित होने के कारण ही इस विषय को शोध प्रबंध की समस्या के रूप में चुना है।

समस्या कथन

शोधकर्त्री ने **''माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन''** विषय का शोध के लिये चुना है।

शोध के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों के समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के महिला शिक्षकों की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के कुल पुरूष एवं महिला शिक्षकों की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों के समयोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के महिला शिक्षकों की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के कुल पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

- माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूषएवं महिला शिक्षकों के समयोजन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमाएँ

- प्रस्तुत अध्ययन केवल माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर ही किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल जयपुर शहर के विद्यालय ही शामिल किये गये हैं।
- शोध कार्य में शिक्षकों की समायोजन संबंधी समस्याओं को लिया गया है।

न्यादर्श

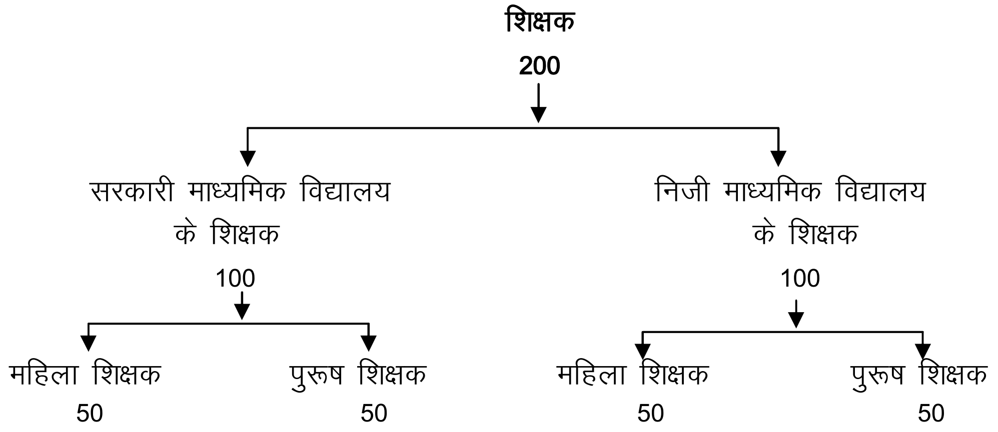

शोध विधि

सर्वेक्षण विधि

अध्ययन के चर

1. स्वतंत्र चर – समायोजन
2. आश्रित चर – शिक्षक

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में दंत संकलन की प्रक्रिया के रूप में प्रशनावली का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में मंगल शिक्षक समायोजन सूची को लिया गया है। इस सूची में 21 आयामों को शिक्षक समायोजन के क्षेत्रों के लिये चुने है। 410 मद इन आयामों के तहत जमा है। इन मदों की विचार संबंद्धता, भाषा, उपयुक्ता की जांच की गई। 410 मदों में से 387 आइटम मद विश्लेषण के अधीन थे। शेष 23 आइटम के उन्मूलन के लिए नेतृत्व किया।

प्रदतों का संकलन

प्रदत्तों के संकलन के लिए चुने गए प्रत्येक विद्यालय के शिक्षकों को प्रश्नावली देकर उनसे भरवाकर प्रदतों को संकलित किया गया। शिक्षकों को प्रश्नावली वितरित कर उन्हें आवश्यक निर्देश भी

दिये गय। यद्यपि निर्देश प्रश्नावली के मुख्य पृष्ठ पर ही दिये हुए थे। शिक्षकों को अपने स्वतंत्र रूप से उत्तर देने के लिए कहा गया। वैसे परिक्षणों को भरने के लिए कोई समय सीमा निश्चित नहीं थी, फिर भी अपेक्षा की गयी कि शीघ्रता से उत्तर दे। उत्तर पत्रों के संकलन के बाद परीक्षण का अंकन, मैनुअल में दी गयी विधि के आधार पर किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

न्यादर्श में सम्मिलित शिक्षकों पर मंगल शिक्षक, समायोजन सूची को प्रशासित किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग प्राप्तांकों के वितरण पर निभ्रर करता है। अतः प्राप्तांकों की प्रसामान्यता की जांच करना आवश्यक होता है।

परिकल्पना 1 : माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों के समायोजन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक विवरण

चर	ग्रुप	संख्या	माध्य	प्रमापविचलन	टी मूल्य
समायोजन	पुरूष शिक्षक	50	30.95	3.88	
	महिला शिक्षक	50	32.90	3.30	1.75

0.05 – स्तर पर मान सार्थक

उपरोक्त सारणी के अनुसार सरकारी विद्यालय के पुरूष व महिला शिक्षकों के समयोजन संबंधी समस्याओं का माध्य ज्ञात करने पर पुरूष शिक्षकों तथा महिला शिक्षकों का क्रमशः 30.95 32.95 पाया गया। पुरूष शिक्षको का माध्य महिला शिक्षको की अपेक्षा कम है माध्यों के बीच अन्तर की सार्थकता की जांच टी द्वारा किये जाने पर टी का मान 1.75 पायागया जो कि 0.05 के स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना 2 : माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों के सामयोजन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक विवरण

चर	ग्रुप	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
समायोजन	पुरूष शिक्षक	50	33.65	2.77	.36
	महिला शिक्षक	50	33.35	2.47	

0.05 स्तर पर मान सार्थक

उपरोक्त सारणी के आधार पर निजी विद्यालय के पुरूष व महिला शिक्षकों के समायोजन संबंधी समस्याओं का माध्य ज्ञात करने पर पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षकों का क्रमशः 33.65 तथा 33.35 पाया गया। पुरूष शिक्षकों का माध्य महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है। माध्यों के बीच अन्तर की सार्थकता की जांच टी द्वारा किये जाने पर टी का मान .36 पाया गया जो कि 0.05 के स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना 3 : माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों के शिक्षकों के समायोजन संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक विवरण

चर	ग्रुप	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
समायोजन	पुरूष शिक्षक	100	43.93	8.19	7.94
	महिला शिक्षक	100	51.11	9.23	

0.01 स्तर पर मान सार्थक

उपरोक्त सारणी के आधार पर सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालय के शिक्षकों के समायोजन संबंधी समस्यआों का माध्य ज्ञात करने पर सरकारी विद्यालयों का माध्य निजी विद्यालयों की अपेक्षा कम है। माध्यों के बीच अन्तर की सार्थकता की जांच टी द्वारा किये जाने पर टी का मान 7.94 पाया गया जो कि 0.01 के स्तर पर सार्थक नहीं है, अतः परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष

- माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों के समायोजन संबंधी समस्याओं का विश्लेषण करने पर पाया गया कि इनमें समयोजन में संबंधी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् इन्हें समस्याओं का समान रूप से सामना करना पड़ता है।
- माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों के समयोजन संबंधी समस्याओं की अन्तर की जांच टी द्वारा करने पर पाया गया कि इनमें समायोजन से संबंधी समस्याओं में कोई अन्तर नहीं पाया गया। अर्थात् इन्हें समस्याओं का समान रूप से सामना करना पड़ता है।
- समायोजन संबंधी पूर्ण समस्याओं का विश्लेषण माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य किया गया। इनमें समायोजन से संबंधी समस्याओं में अन्तर पाया गया अर्थात् निजी विद्यालयों के शिक्षकों को समायोजन संबंधी समस्याओं का सामना अधिक करना पड़ता है, सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों को समायोजन संबंधी समस्याओं का सामना कम करना पड़ता है।

अग्रिम शोध हेतु सुझाव

अग्रिम शोध के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए गए है :

- विभिन्न स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के समायोजन संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन प्रधानाध्यापकों के समायोजन संबंधी समस्याओं को लेकर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय व विश्वविद्यालय स्तर पर भी किया जा सकता है।
- अध्ययन अन्य स्थानों को लेकर उनकी तुलना करते हुए किया जा सकता है।
- शिक्षकों के समायोजन सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन बड़ा न्यादर्श लेकर भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रिहोत्री, रविन्द्र (1997)–''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं एवं समाधान, जयपुर राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।''
2. अग्रवाल जे.सी. (1967) ''शैक्षिक विचार'' नई दिल्ली, एरिया बुक डिपो।
3. अग्रवाल जे.सी. (2007) –''शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन के मूल तत्व'' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
4. भट्टाचार्य जे.सी. (2007)–''अध्यापक शिक्षा'' आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
5. बैस एच.एस. ''शिक्षा की रूपरेखा'' (2003), नई दिल्ली आशीष पब्लिशिंग हाउस।
6. अनेजा (1993) ''राजेन्द्र के ओपन द डोर्स ऑफ ऑप्च्यूनिटी ईव्स बीकल।
7. जी.एल. बंसल (1988) ''दिशाहीन शिक्षा से छुटकारा पाया जा सकता है।''
8. शर्मा, पुष्पलता (1984) ''विभिन्न स्तर पर कार्यरत महिलाओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन'' राजस्थान विश्वविद्यालय।
9. सुचेता (1986) ''माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों का अध्ययन'' राजस्थान विश्वविद्यालय।
10. वर्मा विद्योतमा (1987) ए सर्वे ऑ पर्सनल एण्ड सोशल प्राब्लम ऑफ लेडी टीचर इन एलिमेंटरी स्कूल, उदयपुर विश्वविद्यालय।

□□□